हस्ताक्षर

हिंदू कॉलेज की हस्तलिखित अर्द्धवार्षिक पत्रिका

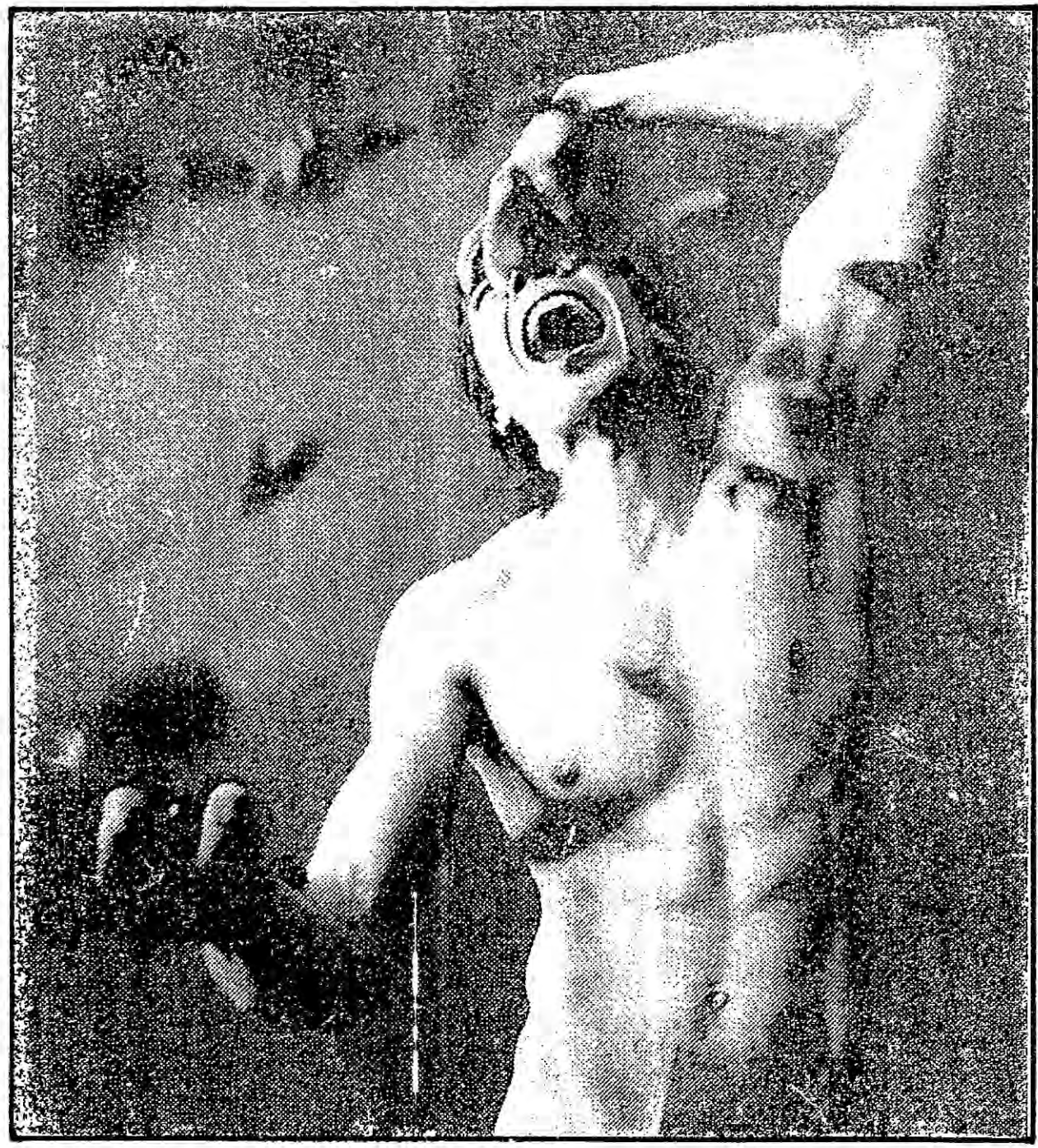

वर्ष–04, अंक–07 (जुलाई– दिसंबर 2008)

चित्रकार दोस्तों के नाम

तुम मुझे रंगों की दुनिया में ले चलो
मैं तुम्हें शब्दों के मेले में ले चलता हूँ
शब्द केवल शब्द नहीं होते
उनके पीछे बहुत से लोग होते हैं
रंग-बिरंगे कपड़ों वाले लोग
लेकिन उनके कपड़ों का मुखर रंग
मिट्टी का रंग होता है,
मिट्टी जिससे सारे रंग जन्म लेते हैं।

तुम मुझे अपने रंगों की दुनिया में ले चलो
जहाँ मेरी माँ की रामायण पढ़ती आवाज़ ले जाती है
क्या तुम मुझे मेरी माँ की आवाज़ का रंग बता सकते हो
जबकि मैं तुम्हारे रंग को एक आवाज़ दे सकता हूँ
आवाज —
जो मिट्टी की गंध से आती है
और मेरी कविताओं में
तुम्हारे कैनवास पर बिखरे रंगों की तरह फैल जाती है
तुम मेरे शब्दों को रंग दो
मैं तुम्हारे रंगों को शब्द दूंगा।

— कुमार विकल

हस्ताक्षर

अंक-07 (जुलाई-दिसंबर 08)

प्रधान-संपादक

श्री अभय रंजन

संपादक-मण्डल

धर्मेन्द्र प्रताप सिंह
विजय कुमार
अनुज खरब
सोनल गौड़
सुदीप तिरकी

रेखांकन

कुमार भास्कर

लेखन-सहयोग

डॉ. रामेश्वर राय
श्री अभय रंजन
धर्मेन्द्र प्रताप सिंह
आशुतोष प्रताप सिंह
महामाया प्रसाद पाण्डेय
अमितेश कुमार
सुनीत कुमार
चित्रा झा
सोनल गौड़
रवि यादव
दीपिका
समृद्धि चोपड़ा
चाँदनी
संजीव कुमार

संपादकीय-संपर्क

हिंदी विभाग, हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

मोबाइल नंबर-- 9868995599, ई-मेल पता- hastakshar.hindi@gmail.com

सहयोग राशि -- चालीस रूपये

नोट-- प्रकाशित रचनाओं के विचार से हस्ताक्षर का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रम

पृष्ठ संख्या

① **चौखट :** श्री अभय रंजन — 01

② **विविधा :**
- वक्तव्य : 'साहित्य का सच' — प्रो० सुधीश पचौरी — 03
- साक्षात्कार : 'नई आज़ादी की लड़ाई लड़नी ही होगी' — विष्णु प्रभाकर — 11
- स्मृति शेष : विजय तेंदुलकर — 'खामोश ! अदालत ज़ारी है' — आशुतोष प्रताप सिंह — 17
- संस्मरण : खिड़की से झाँकती वे सूनी आँखे — डॉ० हरीन्द्र कुमार — 25
- कविताएँ : तमन्ना बांगा (16), आशुतोष प्रताप सिंह (19), सोनल गौड़ (24), अरुंधति (27), राजपाल सिंह यादव (42), अमितेश (61), समृद्धि चोपड़ा (28)
- अनन्तर : अद्भुत भारत — श्री अभय रंजन — 29

③ **पुनर्पाठ :** राम की शक्ति पूजा : मानवीय संकल्प की अपराजेयता का आख्यान — डॉ० रामेश्वर राय — 34

④ **अपनी ज़मीन :** साहित्य के नये पटल का सर्जक — 'जयकांतन' — विजय कुमार — 43
- कहानी सारांश : अंतरंग पवित्र होता है — डी० जयकांतन — 47

⑤ **देशान्तर :** संघर्ष का महानायक — 'सोल्झनित्सिन' — धर्मेन्द्र प्रताप सिंह — 57
- कहानी : वह दाहिना हाथ — अलेक्सांद्र सोल्झनित्सिन — 62

⑥ **इन दिनों :**
- 'एक नए क्षितिज की कविता' — आशू मिश्रा (वाजश्रवा के बहाने (खण्डकाव्य) — कुँवर नारायण) — 75
- 'यादों की गलियों से' — नीरज कुमार सिंह (निराला की गली में (संस्मरण) — डॉ० हरीश नवल) — 79
- 'कुछ फलसफे खाली जेबों में' — रूपेश शुक्ल (दूबधान (कविता संग्रह) — अनामिका) — 81
- 'विमर्शों के नये अध्याय की शुरूआत' — महामाया प्रसाद पाण्डेय (रेत (उपन्यास) — भगवानदास मोरवाल) — 83
- प्रतिलिपि (ई-पत्रिका) — अमितेश के साथ अन्य — 86

⑦ **मुद्दा :** 'खेल का हतभाग्य–सौभाग्य खिलाड़ी का' (परिचर्चा) — 94

⑧ **पांडुलिपि :** अंतिम स्तुति एवं दुः कविताएँ — कुमारेन्द्र पारसनाथ सिंह — 99

चौखट

मानवता को जीवन की सच्ची राह दिखाना शिक्षा का मूल कार्य है। शिक्षा ही मूल्यों के नवनिर्माण एवं मूल्य आधारित जीवन बनाने का एकमात्र साधन है। इसी के द्वारा हम जीवन में कर्मकुशलता, व्यवसायिक दक्षता, बौद्धिक विकास एवं विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। लेकिन तेजी से बदल रही परिस्थितियों से उत्पन्न सामाजिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों ने कई चुनौतीपूर्ण संकटों को जन्म दिया है। उनमें एक तो हिन्दी समाज के साथ अन्य समाजों में अपठनीयता का संकट तो है ही, वहीं दूसरी ओर पठनीय होने के अर्थ को भी जांचने की जरूरत है।

एक सवाल यह है कि लगातार साक्षर हो रहे भारत में जीवन के हर क्षेत्र से मूल्य क्यों गायब हो रहे हैं। शिक्षितों के बीच भी कई तरह की संकीर्णताएं (जाति, क्षेत्र, धर्म, लिंग, नस्ल, वर्गगत इत्यादि) देखने को मिल जाएंगी। साक्षर भारत के अधिसंख्य लोग चीजों की सही व्याख्या या तह तक पहुंचने के लिए स्वयं की दृष्टि के बजाए प्रचलित / लोकप्रिय / लुभावने नारों, दृष्टियों और मानकों द्वारा देखने की आदी होते जा रहे हैं। ऐसी भयावह स्थिति हमें मुक्त करने के बजाए दिग्भ्रमित करती है और एक अंधी दौड़ व होड़, चाहे विकास के नाम पर हो या भौतिकतावाद के नाम पर, पैदा करती है जिसमें हम शामिल हो जाते हैं।

इसलिए हमें अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप ही अपनी इच्छाओं को विस्तार देना है लेकिन व्यक्तिगत / स्वकेन्द्रित होने से अलग इन इच्छाओं का जुड़ाव उदात्तता व वृहतर मानकों से होना चाहिए। इसकी पहल खुद ही करनी होगी क्योंकि व्यक्ति से समूह, समूह से समाज और समाज से देश बनते हैं। तभी हम अपने समय और समाज के सच को समझेंगे और बेहतर, ठोस व टिकाऊ विकास निर्मित कर पाएंगे। इसी को फोकस करती एक कविता 'शब्द' दी गयी है, जिसमें शब्द से संस्कार व सरोकार निर्मिति की बात कही गयी है।

पूर्व प्रधानमंत्री व सामाजिक न्याय के प्रणेता श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के निधन से अचानक अंधकार भर गया है। हमें उनके जीवन के उजाले को समझने व अपनाने की ऊर्जा निर्मित करनी होगी - जिसमें उसूल की राजनीति, राजनीति में परिवारवाद को बढ़ावा न देना, अंतिम सांस तक ज्वलंत मुद्दे के लिए सक्रियता और सामाजिक - राजनीतिक परिवर्तन के लिए जनता के साथ सतत प्रयासरत रहना - शामिल है। हस्ताक्षर की ओर से श्रद्धांजलि सुमन।

देश-दुनिया की व्यवस्थागत खामियों और व्यक्तिगत खामियों को दूर करने के लिए मनुष्य में - स्नेह, प्रेम, सत्यता, पवित्रता, अहिंसा, करुणा, दया - जैसे शब्दों के 'भावों' को सजगता से अपनाने व विकसित करने की जरूरत है। इसलिए मुझे लगता है कि इस देश को एक सांस्कृतिक व आध्यात्मिक क्रांति की सख्त जरूरत है।

संकटों और संभावनाओं के बीच झूलती मानवता अपनी रचनात्मक अमूल्य निधि व नेह के जरिए सशक्त, समृद्ध व स्वर्णिम भारत के निर्माण में अग्रसर रहे —— साठवीं गणतंत्र की शुभकामनाओं के साथ, 'हस्ताक्षर' का यह अंक आपकी प्रतिक्रिया के लिए शुक्रगुजार रहेगा।

अभय रंजन